आई एस एस एन 0971-9873

आई सी एम आर पत्रिका

वर्ष-29, अंक-9

सितम्बर, 2015

इस अंक में

- *एडीज़ इजिप्टाई* की जैवपारिस्थितिकी एवं डेंगी से बचाव 89
- भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद के समाचार 93
- राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय वैज्ञानिक गतिविधियों में आई सी एम आर के वैज्ञानिकों की भागीदारी 94
- आई सी एम आर की वित्तीय सहायता में संपन्न एवं भावी संगोष्ठियां/सेमिनार/कार्यशालाएं/पाठ्यक्रम/सम्मेलन 95

संपादक मंडल

अध्यक्ष — डॉ सौम्या स्वामीनाथन
सचिव, भारत सरकार
स्वास्थ्य अनुसंधान विभाग एवं
महानिदेशक, भारतीय आयुर्विज्ञान
अनुसंधान परिषद

प्रमुख, प्रकाशन एवं सूचना प्रभाग — डॉ विजय कुमार श्रीवास्तव

संपादक — डॉ कृष्णानन्द पाण्डेय

प्रकाशक — श्री जगदीश नारायण माथुर

एडीज़ इजिप्टाई की जैवपारिस्थितिकी एवं डेंगी से बचाव

डॉ बी. एन. नागपाल

बुखार से सामान्यतः शरीर का तापमान बढ़ जाता है। बुखार आने के अनेक कारण हो सकते हैं किंतु मादा *एडीज़ इजिप्टाई* के काटने से फैलने वाला बुखार डेंगी बुखार के नाम से प्रचलित है। डेंगी बुखार के लिए जिम्मेदार विषाणु के चार सीरोटाइप्स हैं जो DEN1, DEN2, DEN3 और DEN4 के नाम से ज्ञात हैं। डेंगी को हड्डी तोड़ बुखार भी कहते हैं, क्योंकि इसमें सभी जोड़ों और हाथ-पैर में दर्द होता है। इसके अतिरिक्त, आंखों के पीछे भी अत्यधिक पीड़ा होती है और सिर-दर्द भी रहता है। डेंगी बुखार इसलिए और ज्यादा खतरनाक हो गया है क्योंकि इसकी कोई दवा नहीं है और न ही अभी तक इसके बचाव के लिए कोई टीका (वैक्सीन) विकसित किया जा सका है।

डेंगी बुखार सर्वप्रथम सन् 1785 में दक्षिण अफ्रीका में पाया गया। इसके बाद, एशिया के दक्षिण पूर्वी देशों में फैलना शुरू हुआ। सन् 1960 तक यह रोग सिर्फ 40 देशों तक सीमित था किंतु अब इसका विस्तार 128 देशों में हो चुका है। डेंगी बुखार फैलाने वाला मच्छर *एडीज़ इजिप्टाई* 182 देशों में अपना घर बना चुका है। भारत देश में डेंगी मामलों की संख्या वर्ष 2009 में 15,535 से बढ़ कर वर्ष 2015 में 27,676 तक हो चुकी है। दिल्ली में यह संख्या 1153 से बढ़कर 10,200 हो चुकी है (राष्ट्रीय रोगवाहक जनित रोग नियंत्रण कार्यक्रम)।

डेंगी बुखार की संख्या में वृद्धि के संभावित कारण

अनियोजित शहरीकरण : बढ़ती जनसंख्या के प्रभाव में हमारे शहरों का अनियंत्रित विकास हो रहा है, जिसके फलस्वरूप गंदे पानी व कचरा निस्तारण की समस्याएं बढ़ रही हैं जो मच्छरों के पनपने में सहायक बन रही हैं। यदि विकास प्रक्रिया व्यवस्थित एवं नियंत्रित ढंग से की जाए तो यह समस्या कम हो सकती है।

पानी की आपूर्ति में कमी : अत्यधिक जनसंख्या की वजह से पानी की आपूर्ति पर काफी बोझ पड़ा है जिसके कारण शहरवासियों को पानी जमा करने की जरूरत पड़ने लगी है। जिन घरों में पानी की सप्लाई कम होती है, उनमें पानी ज्यादा जमा किया जाता है। ऐसे घरों में मच्छरों के पैदा होने सम्भावना ज्यादा होती है।

ठोस अपशिष्ट पदार्थों का निस्तारण : जनसंख्या वृद्धि, अनियोजित शहरीकरण, मानवजनित भू-भाग में बदलाव के फलस्वरूप मच्छरों की प्रजातियों में काफी बदलाव पाया गया है। *एडीज़ इजिप्टाई* को इस प्रकार के बदलाव से बहुत फायदा पहुंचा है तथा इसकी संख्या बढ़ने लगी है। इसी सन्दर्भ में जनसंख्या घनत्व के बढ़ने के साथ-साथ लोगों द्वारा निस्तारित कचरा भी उसी अनुपात में बढ़ रहा है, जिसके

सही ढंग से व समय पर निस्तारण न होने पर बरसात के मौसम में भी एडीज़ मच्छरों को पनपने का स्थान मुहैया करवाते हैं। सुनियोजित शहरीकरण, व्यवस्थित कचरा निस्तारण एवं पानी की सुचारु व्यवस्था से शहर को इस तरह से मच्छरों के बढ़ते प्रकोप से बचाया जा सकता है।

लोगों का आवागमन : दिल्ली जैसे बड़े शहरों में लोग नौकरी, व्यवसाय, शिक्षा, इत्यादि के लिए आस-पास के क्षेत्रों (गांव/कस्बे/शहर) से रोजाना आते हैं। चूंकि, यह मच्छर दिन में काटता है, इसलिए इस दौरान जब लोग अपने काम वाली जगह, पार्क, स्कूल, जैसे स्थानों पर हों, उस दौरान यह मच्छर उनको काट सकता है और डेंगी फैला सकता है। ऐसा व्यक्ति अपने घर वापस जाने पर बीमारी की वजह से घर के आस-पास के क्लीनिक से ही जांच करवाता है। यदि उसमें डेंगी की पुष्टि हो जाये तो वेक्टर कंट्रोल की प्रक्रिया घर के आस पास की जाती है। जबकि, मच्छर नियंत्रण की प्रक्रिया उसे मच्छर के काटने के स्थान पर की जानी चाहिए। इसलिए पीड़ित व्यक्ति को मच्छर के काटने के स्थान और दिन में उसके उपस्थित रहने की जानकारी भी अत्यधिक जरूरी है, ताकि वेक्टर कंट्रोल प्रोग्राम (रोगवाहक मच्छर पर नियंत्रण रखने का कार्यक्रम) को सही दिशा मिल सके।

एडीज इजिप्टाई और *एडीज़ एल्बोपिक्टस* दो प्रमुख रोगवाहक मच्छर हैं जिनसे डेंगी फैलता है। इन मच्छरों का जीवन चक्र निर्धारित होता है जिसमें अंडे से मच्छर बनने में कम से कम एक हफ्ते का समय लगता है। ये मच्छर साफ ठहरे हुए पानी में अंडे देते हैं। अण्डों से लार्वा (डिम्भक) बनने में 2-3 दिन का समय लगता है। लार्वा से प्यूपा बनने में 4-5 दिन और प्यूपा से एक वयस्क मच्छर बनने में और 1-2 दिन लगते हैं। इसमें वातावरण के तापमान और उसकी आर्द्रता की भी महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

एडीज़ इजिप्टाई की जैव-पारिस्थितिकी

एडीज़ मच्छर प्रायः अंधेरे में नमी वाले स्थानों पर छिपता है जहां फर्नीचर होते हैं या लटके हुए कपड़ों इत्यादि पर। इसलिए दीवारों पर किये गए मच्छररोधी छिड़काव का एडीज़ मच्छर पर असर नहीं होता। चूंकि, यह मच्छर घर में ही रहता है, इसलिए घर के बाहर की गई फॉगिंग का भी इस पर असर नहीं होता। नर मच्छर खून नहीं पीता बल्कि मादा मच्छर मानव का रक्त पान करती है। ये मच्छर सबसे ज्यादा सूर्योदय के बाद और सूर्यास्त से दो घंटों पहले काटते हैं। दिन में काटने के व्यवहार के चलते *एडीज़ इजिप्टाई* मच्छर कई लोगों को एक बार में काट कर अपना पोषण पूरा करता है। कारण कि दिन में लोग जागृत अवस्था में होते हैं, उन्हें मच्छर के काटने का पता जल्दी चल जाता है और वे उसे उड़ा देते है। चूंकि, मच्छर को अपने पोषण का पर्याप्त रक्त नहीं मिल पाता, इसलिए वह दूसरे व्यक्ति को काटता है और इस तरह कई लोगों को डेंगी का विषाणु संचारित करता है। इसलिए डेंगी के केसेस (मामले) ज्यादा होते हैं। इनकी उड़ान बहुत सीमित दूरी तक होती है। यह मच्छर केवल 300-400 मीटर तक उड़ सकता है। अतः, यह अधिकतर इंसानों के संपर्क में रहता है।

मादा मच्छर अनेक प्रकर के पात्रों में अंडे देती है और ये अंडे इकट्ठे नहीं अपितु छोटे-छोटे दस्तों में देती है। ज्यादा पात्रों में अंडे देने से मच्छरों के जीवित रहने की सम्भावनाएं ज्यादा बढ़ जाती हैं। किसी न किसी पात्र में अंडे पूर्ण विकसित हो कर मच्छर बन ही जाते हैं। *एडीज़ इजिप्टाई* मच्छर की इस प्रकार की अंडे देने की रणनीति के चलते राष्ट्रीय रोगवाहकजन्य रोग नियंत्रण कार्यक्रम (*नेशनल वेक्टरबोर्न डिजीज़ कंट्रोल प्रोग्राम*) को इस मच्छर के पनपने के स्थानों को खोज कर उन्हें हटाने में बड़ी मशक्क़त करनी पड़ती है। सामान्यतः, एक मादा मच्छर 60-100 अंडे देती है। ये अंडे काफी समय, लगभग 1 वर्ष तक जीवित रहते हैं। एडीज़ मच्छर अपने अंडे सीधे पानी में न देकर पानी के पात्र की अंदरूनी दीवारों पर चिपकते हुए देते हैं।

ये अंडे पानी नहीं मिलने की अवस्था में भी साल भर जीवित बने रहते हैं और जब कभी इस तरह के खाली पात्रों में बरसात से या मनुष्यों द्वारा पानी दोबारा डाला जाता है, तुरंत लार्वा बन जाते हैं। इस तरह के पात्र यदि कचरे में पड़े रहे तो बरसात के मौसम में इनमें दोबारा मच्छर पनपने लगते हैं।

मादा *एडीज़ इजिप्टाई* मच्छर एक बार में लगभग 60-100 अण्डे देती है। अण्डे देने के तुरन्त बाद फिर रक्त का पोषण करती है। पूरे जीवन काल में 12 से 15 बार अण्डे दे सकती है : *एडीज़ इजिप्टाई* मच्छर के अण्डे एक साल तक बिना पानी के जीवित रह सकते हैं।

सूखे हुए अंडों को बहुत दूर तक ले जाया जा सकता है। अंडे साल भर जीवित अवस्था में बने रहने की वजह से ये आसानी से एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुंच जाते हैं। ऐसा कई बार पाया गया है कि *एडीज़ इजिप्टाई* मच्छर के अंडे अपने इन्हीं गुणों की वजह से मालवाहक जलपोतों द्वारा सुदूर देशों तक पहुंच गए और उनका वहां के स्थानीय वातावरण के अनुरूप विकास हो गया। इस प्रकार इन मच्छारों ने वहां भी अपना आवास बना लिया जहां पहले नहीं पाए जाते थे। *एडीज़ इजिप्टाई* मच्छरों की विशेषता यह है कि नर मच्छर का जीवन काल एक सप्ताह से 10 दिनों और मादा मच्छर का 4 से 6 सप्ताह तक का होता है।

बरसात के मौसम के बाद वातावरण में नमी और तापमान *एडीज़ इजिप्टाई* मच्छर के पनपने के लिए उपयुक्त हो जाता है और वयस्क *एडीज़ इजिप्टाई* के जीवित रहने की सम्भावनायें भी लगभग महीने तक बढ़ जाती हैं। जिसके कारण यदि वायरस ग्रसित मच्छर जीवित रहा तो उसकी डेंगी फ़ैलाने की सम्भावनायें भी उसी अनुपात में बढ़ जाती हैं। मादा *एडीज़ इजिप्टाई* मच्छर हर दूसरे दिन रक्त पर पोषण करती है जो उसके अंडे बनाने की प्रक्रिया में सहायक होता है और एक बार में कई लोगों को काट कर अपना पोषण पूरा करती है। इसलिए डेंगी फ़ैलाने की क्षमता में इस दौरान काफी इजाफा हो जाता है।

एडीज़ इजिप्टाई मच्छरों के पनपने के स्थान

छत पर रखी पानी की टंकी, जमीन पर रखी पानी की टंकी, सीमेंट के टैंक, पानी एकत्रित करने के लिए प्लास्टिक के पात्र, घरों में रखे सजावटी गमले व पानी के फव्वारे, चिड़ियों के लिए दाना-पानी डालने वाले बर्तन, अनुप्रयुक्त टायर, कूलर, छत पर पड़ा कचरा, ठोस अपशिष्ट/मिटटी के बर्तन, स्नानागार (बाथ रूम) में रखे उपकरण, आग बुझाने वाली बाल्टी, नारियल का खाली कवर, अन्य पौधे। इतना ही नहीं, *एडीज़ इजिप्टाई* के प्रजनन स्थल अस्पतालों में भी पाए गए हैं और घरों के आस-पास पड़े हुए अपशिष्ट जैसे पुराने जूते, फेंके हुए खिलौने, बाल्टी, अन्य कंटेनर, गमले, ईंटों की छेदें, पालतू जानवरों के बर्तन, इत्यादि में भी इन मच्छरों को पैदा होने में सुविधा होती है। *एडीज़ इजिप्टाई* अपने प्रजनन के लिए किसी भी प्रकार के बर्तन, बेकार पड़े टायर, ढक्कन, इत्यादि का उपयोग अपने अंडे देने में कर लेता है। इसलिए ऐसे किसी भी स्थान पर छत, बालकनी, छज्जे, गमले जैसी चीज़ों में पानी न जमा होने दें।

छत पर रखी पानी की टंकियां

प्लास्टिक के बर्तन एवं अनुप्रयुक्त टायर

कबाड़ और लोहे के बेकार ड्रम

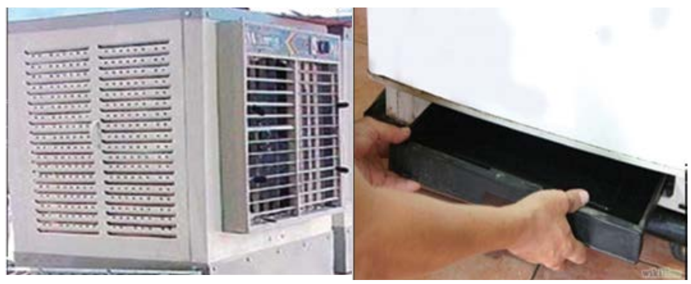

कूलर्स एवं फ्रिज़ की डीफ्रॉस्ट ट्रे

बचाव एवं रोकथाम

- क्योंकि *एडीज़ इजिप्टाई* मच्छर घरों के आस-पास और घरों में पैदा होने वाला मच्छर है, अतैव समाज में रहने वाले लोगों की नैतिक जिम्मेदारी है इनकी उत्पत्ति की रोकथाम करना।
- जनसामान्य को किसी स्वास्थ्य कार्यकर्ता को अपने घरों में प्रवेश करने का अवसर देना चाहिए ताकि आस-पास के सारे बर्तनों और पात्रों की जांच की जा सके।
- अपने घरों के आस-पास अपशिष्ट पदार्थ जमा न होने दें।
- आस-पास के सभी मच्छर प्रजनन स्थलों पर नजर रखी जानी चाहिए तथा घरों के आस-पास एवं छतों पर कड़ी निगरानी रखनी चाहिए।
- पूरी बाजू के कपड़े पहनने चाहिए ताकि मच्छर दिन में न काट सके।
- पानी के बर्तन ढक कर रखे जाने चाहिए और 5-7 दिनों से ज्यादा पानी एकत्रित नहीं करना चाहिए।
- यदि घर का कोई सदस्य डेंगी बुखार से पीड़ित हो तो उसे मच्छरदानी के भीतर सुलाना चाहिए जब तक वह पूरी तरह स्वस्थ न हो जाए।
- दिन में काटने वाला कोई भी मच्छर एडीज़ हो सकता है इसीलिए मच्छर भगाने वाले सारे उपकरणों का प्रयोग करना चाहिए।
- सप्ताह में एक दिन आस-पास की साफ-सफाई अवश्य की जाए।
- जिन स्थानों से पानी निकालना संभव न हो वहां 1 प्रतिशत टेमेफॉस प्रयोग में लाई जाए।

डेंगी बुखार होने पर क्या करें

1. किसी भी बुखार के होने पर डॉक्टरी सलाह जरूर लें एवं जांच करवाएं।
2. एस्प्रिन, डिस्प्रिन तथा ब्रूफिन जैसी दवाएं न खाएं।
3. ऐसे बुखार की अवस्था में आराम करें तथा ज्यादा से ज्यादा तरल पदार्थ पियें, व रक्तचाप की जांच करवाते रहें।
4. घर में जिस व्यक्ति को बुखार हो उसे मच्छरदानी में ही सुलाएं (दिन में भी)।

डेंगी बुखार के लक्षण	गंभीर डेंगी (डेंगी रक्तस्रावी ज्वर) के लक्षण
• मन्द से उच्च ज्वर	• ज्वर
• गंभीर सिर दर्द	• गंभीर पेट दर्द
• आंखों के पीछे दर्द	• बार-बार उल्टी आना
• पेशी और जोड़ों में दर्द	• रक्तस्राव
• त्वचा पर चकत्ते	• थकान
	• बेचैनी
	• रक्त के साथ उल्टी आना

व्यक्तिगत स्तर पर डेंगी से बचाव के तरीके

- व्यक्तिगत स्तर पर डेंगी से बचाव के लिए बरसात के बाद के महीनों में जब बाहर मच्छर ज्यादा हों तो बाहर जाते हुए पूरी बांह के वस्त्र पहनें ताकि मच्छर के काटने से बचाव हो सके।
- घर में मच्छर को दूर रखने वाले साधनों का प्रयोग करें जैसे मैट, कॉइल्स, रिपेलेंट्स, इत्यादि।
- अपने घर में फूलदान, सजावटी पौधों के पात्रों, कूलर्स, इत्यादि की नियमित जांच करें व समय-समय पर पानी बदल दें।
- घर में पानी खुला न छोड़ें, यदि पानी को ज्यादा दिन तक रखना हो तो उसे सही तरह से ढक्कन लगा कर रखें।

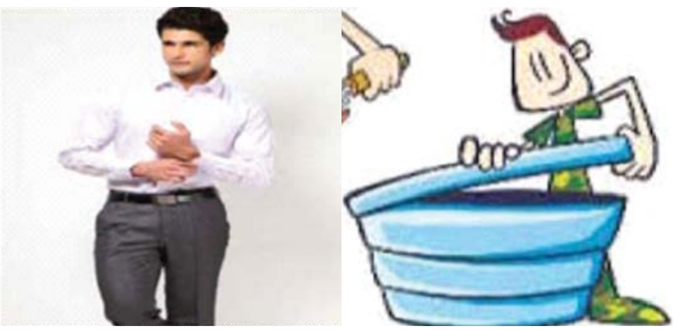

पूरी बांह के वस्त्र पहनें, पानी ढक कर रखें

मच्छर के काटने से बचें

फूलदान, सजावटी पौधों के पात्रों में पानी की समय-समय पर जांच करें

समाज का डेंगी बचाव में योगदान

- सामाजिक स्तर पर लोगों में जागरूकता फैलाएं। आस-पास गन्दगी न होने दें।
- अपने आवास के आस-पास मच्छरों को न पनपने दें।
- कॉलोनी, मोहल्ले के लोग महीने में एक बार समूह बना कर अपने आस-पास की जगह की ठीक से जांच करें और ऐसे स्थानों की सफाई करवाएं जहां मच्छर पनप सकते हों।

डेंगी के बचाव में सामुदायिक योगदान एवं मच्छरों के प्रजनन स्थलों को हटाना

समाज में डेंगी के प्रति जागरूकता बढ़ाना

निष्कर्ष

डेंगी बुखार की दवा या वैक्सीन (टीका) नहीं है परन्तु इसके वाहक मच्छर *एडीज़ इजिप्टाई* पर नियंत्रण रखना ही एक मात्र उपाय है। ये मच्छर हमारे घर में ही पनपते हैं, इसलिए इसकी रोकथाम की जिम्मेदारी भी हमारी है। केवल सरकारी मशीनरी इसकी रोकथाम नहीं कर सकती, प्रत्येक व्यक्ति का योगदान उसके लिए आवश्यक है। जन सहभागिता से डेंगी जैसी बीमारियों पर आसानी से काबू पाया जा सकता है।

यह आलेख भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद् के नई दिल्ली स्थित राष्ट्रीय मलेरिया अनुसंधान संस्थान के वैज्ञानिक 'एफ' डॉ बी. एन. नागपाल से प्राप्त हुआ है।

भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद के समाचार

भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद (आई सी एम आर) के विभिन्न तकनीकी दलों/समितियों की नई दिल्ली में संपन्न बैठकें:

तीव्र कोरोनरी घटना के प्रबंधन पर पंजीकरण केन्द्रों (MACE रजिस्ट्रीज़) के राष्ट्रव्यापी नेटवर्क की स्थापना हेतु पाइलट अध्ययन पर टास्क फोर्स दल की बैठक	1 सितम्बर, 2015
तंत्रिकाविज्ञानी विकार हेतु किफायती स्वास्थ्य सुरक्षा की दिशा में कदम पर टास्क फोर्स दल की बैठक	2 सितम्बर, 2015
घरेलू वायु प्रदूषण विषय पर बैठक	4 सितम्बर, 2015
जानपदिक रोगविज्ञानी एवं संचारी रोग (ECD) प्रभाग के अंतर्गत फेलोशिप हेतु विशेषज्ञ दल की बैठक	7 सितम्बर, 2015
ECD प्रभाग के अंतर्गत OSDD के अंतर्गत एक परियोजना पर चर्चा हेतु बैठक	7 सितम्बर, 2015
मानसिक स्वास्थ्य के क्षेत्र में टास्क फोर्स की बैठक	7 सितम्बर, 2015
वायनाड में एक जन स्वास्थ्य अनुसंधान सुविधा की स्थापना हेतु शीर्ष समिति की बैठक	8 सितम्बर, 2015
वार्षिक एवं अंतिम रिपोर्ट की समीक्षा हेतु रोगवाहक जन्य रोग विज्ञान फोरम की परियोजना पुनरीक्षण समिति की बैठक	8 सितम्बर, 2015
पूर्वोत्तर पर विशेषज्ञ दल की बैठक	9 सितम्बर, 2015
अल्प आयु में मधुमेह की शुरुआत सहित व्यक्तियों का पंजीकरण - द्वितीय प्रावस्था नामक परियोजना पर टास्क फोर्स की बैठक	14 सितम्बर, 2015

प्रजनन एवं शिशु स्वास्थ्य प्रभाग के अंतर्गत फेलोशिप हेतु विशेषज्ञ दल की बैठक	15 सितम्बर, 2015
हर्बल/आयुर्वेद पर आधारित डी आर डी ओ द्वारा विकसित उत्पादों का मूल्यांकन करने हेतु विशेषज्ञ समिति की बैठक	15 सितम्बर, 2015
ऑन लाइन एक्स्ट्राम्युरल प्री-प्रपोज़ल्स पर जांच समिति की बैठक	15 सितम्बर, 2015
नवाचार और ट्रांसलेशनल अनुसंधान की विविध समस्याओं को दूर करने हेतु विभिन्न पणधारियों का ब्रेनस्टॉर्मिंग सत्र	16 सितम्बर, 2015
जैवसूचनाविज्ञान प्रभाग की परियोजना पुनरीक्षण समिति की बैठक	16 सितम्बर, 2015
वैश्विक पर्यावरण परिवर्तन और स्वास्थ्य पर उच्च अधिकार प्राप्त समिति की बैठक	17 सितम्बर, 2015
चिरकारी वृक्क रोग पर बैठक	18 सितम्बर, 2015
आई सी एम आर एथिकल गाइडलाइंस फॉर बायोमेडिकल रिसर्च ऑन ह्युमन पार्टीसिपेंट्स- 2006 के संशोधन पर सलाहकार दल की बैठक	18 सितम्बर, 2015
मिथाइलग्लायोक्ज़ल उत्पाद और मिथाइलग्लायोक्ज़ल उत्पाद संयोजन पर विशेषज्ञ दल की बैठक	21 सितम्बर, 2015
प्रजनन एवं शिशु स्वास्थ्य प्रभाग के अंतर्गत जनजातीय स्वास्थ्य पर प्रोटोकॉल को अंतिम रूप देने हेतु बैठक	22 सितम्बर, 2015
राष्ट्रीय विषाणुविज्ञान संस्थान, पुणे द्वारा विकसित एलाइज़ा आधारित प्रौद्योगिकियों के हस्तांतरण हेतु शुल्क एवं रॉयल्टी पर चर्चा करने हेतु बैठक	22 सितम्बर, 2015
प्रजनन एवं शिशु स्वास्थ्य प्रभाग के वैज्ञानिक सलाहकार दल की बैठक	23 सितम्बर, 2015
ई सी डी प्रभाग के अंतर्गत "ट्राइबल प्लान" की बैठक	23 सितम्बर, 2015
पशुजन्य रोगों पर परियोजना पुनरीक्षण समिति की ICMR-ICAR संयुक्त पैनेल की बैठक	24 सितम्बर, 2015
कोशिकीय और आण्विक जैविकी तथा जीनोमिक्स पर परियोजना पुनरीक्षण समिति की बैठक	28 सितम्बर, 2015
"राष्ट्रीय असंचारी रोग लक्षणों की निगरानी हेतु ICMR राष्ट्रीय सर्वेक्षण के कार्यान्वयन हेतु सर्वेक्षण डॉक्यूमेंट्स का विकास" शीर्षक से परियोजना पर बैठक	28 सितम्बर, 2015
औषध उपयोग पर प्रोटोकॉल्स की समीक्षा हेतु विशेषज्ञ दल की बैठक	28-29 सितम्बर, 2015
वायु प्रदूषण और श्वसनी रोग विषय पर विशेषज्ञ दल की बैठक	30 सितम्बर, 2015
क्षयरोग रोधी औषधि ए डी आर निवारण और चिकित्सा प्रबंध पर विशेषज्ञ दल की बैठक	30 सितम्बर, 2015

राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय वैज्ञानिक गतिविधियों में आई सी एम आर के वैज्ञानिकों की भागीदारी

मुम्बई स्थित राष्ट्रीय प्रजनन अनुसंधान संस्थान, आनुवंशिक अनुसंधान केन्द्र की वैज्ञानिक 'एफ' डॉ गीतांजली सचदेव और वैज्ञानिक 'डी' डॉ प्रियंका पर्ते ने प्रजनन बायोमेडिसिन और स्टेम सेल पर तेहरान, ईरान, में सपन्न रायन अंतर्राष्ट्रीय ट्विन कांग्रेस में भाग लिया। (2-4 सितम्बर, 2015)

पुणे स्थित राष्ट्रीय विषाणुविज्ञान संस्थान के वैज्ञानिक 'एफ' डॉ सी. दयाराज ने सिडनी, आस्ट्रेलिया में सम्पन्न 11वें इण्डो-आस्ट्रेलियन जैवप्रौद्योगिकी सम्मेलन में भाग लिया (6-8 सितम्बर, 2015)।

मुम्बई स्थित राष्ट्रीय प्रजनन स्वास्थ्य अनुसंधान संस्थान, आनुवंशिक अनुसंधान केन्द्र की वैज्ञानिक 'एफ' डॉ जयन्ती मानिया-प्रमानिक ने सिडनी, आस्ट्रेलिया में सम्पन्न 11वें इण्डो-आस्ट्रेलियन जैवप्रौद्योगिकी सम्मेलन में भाग लिया (6-8 सितम्बर, 2015)।

चेन्नई स्थित राष्ट्रीय जानपदिक रोगविज्ञान संस्थान के निदेशक डॉ एस. एम. मेहेण्डले तथा वैज्ञानिक 'डी' द्वय डॉ पी. मणिक्कम एवं डॉ तरुण भटनागर ने मेक्सिको सिटी, मेक्सिको में सम्पन्न "TEPHINET 8वें ग्लोबल वैज्ञानिक सम्मेलन" में भाग लिया (6-11 सितम्बर, 2015)।

हैदराबाद स्थित राष्ट्रीय पोषण संस्थान के वैज्ञानिक 'एफ' डॉ बी. दिनेश कुमार ने कुआला लम्पूर, मलेशिया में संपन्न पाम ऑयल को प्रचलित बनाने के 35वें कार्यक्रम में भाग लिया (6-12 सितम्बर, 2015)।

राष्ट्रीय विषाणुविज्ञान संस्थान के वैज्ञानिक 'एफ' डॉ एम.एस. चड्ढा ने यांगून, म्यानमार में संपन्न राष्ट्रीय स्वास्थ्य प्रयोगशाला में ऑनसाइट प्रशिक्षण प्रदान करने एवं उसका मूल्यांकन करने हेतु विश्व स्वास्थ्य संगठन के एक सलाहकार के रूप में भाग लिया (7-11 सितम्बर, 2015)।

पटना स्थित राजेन्द्र स्मारक आयुर्विज्ञान अनुसंधान संस्थान, पटना के वैज्ञानिक 'डी' डॉ वहाब अली ने टोक्यो, जापान में सम्पन्न (i) संक्रमण एवं प्रतिरक्षा पर अवाजी अंतर्राष्ट्रीय फोरम के 14वें सम्मेलन में भाग लिया (8-11 सितम्बर, 2015), तथा (ii) प्रो. नोज़ाकी की प्रयोगशाला का दौरा किया (12-15 सितम्बर, 2015) (8-15 सितम्बर, 2015)।

पटना स्थित राजेन्द्र स्मारक आयुर्विज्ञान अनुसंधान संस्थान के निदेशक डॉ प्रदीप दास ने बेथेस्डा, सं. रा. अ. में अंतरांग लीशमैनियता नियंत्रण एवं उन्मूलन पर संपन्न बैठक में भाग लिया (9-10 सितम्बर, 2015)।

नई दिल्ली स्थित राष्ट्रीय मलेरिया अनुसंधान संस्थान की निदेशक डॉ नीना वलेचा ने जेनेवा, स्विट्ज़रलैण्ड में संपन्न WHO की मलेरिया नीति सलाहकार समिति की बैठक में भाग लिया (16-18 सितम्बर, 2015)।

मुम्बई स्थित राष्ट्रीय प्रतिरक्षारुधिरविज्ञान संस्थान के वैज्ञानिक 'ई' डॉ वी. बाबू राव ने टोरोंटो, कनाडा में संपन्न 27वीं वार्षिक फैनकोनी एनीमिया रिसर्च फण्ड साइंटिफिक संगोष्ठी में भाग लिया (17-20 सितम्बर, 2015)।

नोएडा स्थित कौशिकी एवं निवारक अर्बुदशास्त्र संस्थान की वैज्ञानिक 'एफ' डॉ मौसमी भारद्वाज ने लिसबन, पुर्तगाल में सम्पन्न "HPV- 2015 -30वें अंतर्राष्ट्रीय पैपिलोमावाइरस सम्मेलन, तथा चिकित्सीय एवं जन स्वास्थ्य कार्यशाला में भाग लिया (17-21 सितम्बर, 2015)।

राष्ट्रीय पोषण संस्थान के वैज्ञानिक 'एफ' डॉ डी. रघुनाथ राव ने MPH (इंटरनेशनल कोर्स इन हेल्थ डेवलपमेंट, ICHD) पाठ्यक्रम के लिए NFP फेलोशिप के अंतर्गत KIT हेल्थ रॉयल ट्रॉपिकल इंस्टीट्यूट, नीदरलैण्ड प्रस्थान किए (21 सितम्बर, 2015 से 9 सितम्बर, 2016)।

रोगवाहक नियंत्रण अनुसंधान केन्द्र के वैज्ञानिक 'जी' डॉ के. कृष्णमूर्ति ने नाव पाई तॉ, म्यानमार में संपन्न विश्व स्वास्थ्य संगठन की बैठकों में एक अस्थाई सलाहकार के रूप में भाग लिया। (i) वर्ष 2020 तक लक्षित उपेक्षित उष्णकटिबंधीय रोगों को समाप्त करने पर क्षेत्रीय बैठक तथा (ii) RPRG की 12वीं बैठक में भाग लिया (22-25 सितम्बर, 2015)।

राष्ट्रीय यक्ष्मा अनुसंधान संस्थान के वैज्ञानिक 'डी' डॉ एल. ई. हन्ना तथा वैज्ञानिक 'बी' डॉ एन. एस. गोमती ने बोस्टन, मसाचुसेट्स, सं. रा. अ. में सम्पन्न "Report अंतर्राष्ट्रीय और Report भारत की संयुक्त बैठक में भाग लिया (23-25 सितम्बर, 2015)।

पुडुचेरी स्थित रोगवाहक नियंत्रण अनुसंधान केन्द्र के वैज्ञानिक 'एफ' डॉ ए. मनोनमणि ने वाशिंगटन डी सी, सं. रा. अ. में अण्डरग्रेजुएट के विदेश में व्यावहारिक अनुभव के लिए निर्देशों तथा M Sc. GH स्कॉलरली प्रोजेक्ट एब्रोड प्रोग्राम हेतु बैठक एवं संगोष्ठी में भाग लिया (28-30 सितम्बर, 2015)।

राष्ट्रीय पोषण संस्थान की वैज्ञानिक 'सी' डॉ एम. वी. सुरेखा और वैज्ञानिक 'बी' डॉ के. निर्मला ने जॉर्जिया, सं. रा. अ. में संपन्न कैंसर थिरैपी पर 5वीं विश्व कांग्रेस में भाग लिया (28-30 सितम्बर, 2015)।

आई सी एम आर की वित्तीय सहायता में संपन्न एवं भावी संगोष्ठियां/सेमिनार/कार्यशालाएं/पाठ्यक्रम/सम्मेलन

विषय	दिनांक एवं स्थान	सम्पर्क के लिए पता
डॉक्टरल शोध में समस्याओं और चुनौतियों पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन	25 अगस्त, 2015 वाराणसी	**प्रो. पद्मनाभ द्विवेदी** कृषिविज्ञान संस्थान वाराणसी
भारतीय एरोस्पेस मेडिसिन संस्था का 55वां वार्षिक सम्मेलन	28-30 अगस्त, 2015 बैंगलोर	**विंग कमाण्डर मोना दहिया** एरोस्पेश मेडिसिन संस्थान इंडियन एयर फोर्स बैंगलोर
भारत में जारी सामुदायिक नेत्र स्वास्थ्य प्रैक्टिस के वर्तमान परिदृश्य पर सम्मेलन	30 अगस्त, 2015 हुगली	**डॉ चन्दना चक्रवर्ती** भारतीय सामुदायिक नेत्रविज्ञानी संस्था कोलकाता
व्यावहारिक बाल अर्बुदविज्ञान पर कार्यशाला	5-6 सितम्बर, 2015 लुधियाना	**डॉ प्रवीण सोब्ती** क्रिश्चियन मेडिकल कॉलेज एवं अस्पताल वाराणसी
कर्नाटक चैप्टर - भारतीय विकृतिविज्ञानी एवं सूक्ष्मजीवविज्ञानी संस्था का 42वां सम्मेलन (KCIAPM 2015)	11-13 सितम्बर, 2015 मैंगलोर	**डॉ शारदा राय** कस्तूरबा मेडिकल कॉलेज मैंगलोर

ODISHA APCON 15	13 सितम्बर, 2015 बरहमपुर	**डॉ स्वयं प्रव प्रधान** एम. के. सी. जी. मेडिकल कॉलेज बरहमपुर (उड़ीशा)
भारत में कुष्ठरोग उन्मूलन की स्थिति को बनाए रखने के लिए आदर्श मार्गों की खोज में कुष्ठ रोग की वर्तमान स्थिति पर सम्मेलन	18 सितम्बर, 2015 सिलचर	**प्रो. भास्कर गुप्ता** सिलचर मेडिकल कॉलेज सिलचर (असम)
रेस्टोरेशन फिज़ियोलॉजिकल डीविएशन : चिकित्सकों का मूलभूत उद्देश्य	18-19 सितम्बर, 2015 इलाहाबाद	**डॉ आर. बी. कमल** एम.एल.एन. मेडिकल कॉलेज इलाहाबाद
टेम्पोरल बोन डिसेक्शन कार्यशाला 2015	18-20 सितम्बर, 2015 पुणे	**ले.क. मनोज कुमार के** आर्म्ड फोर्सेज़ मेडिकल कॉलेज पुणे
अशक्तता अनुकूल अस्पतालों में स्त्रीरोगविज्ञानी ओ पी डी और वार्ड सेवाओं का एक मॉडेल विकसित करने हेतु विभिन्न स्टेकहोल्डर्स में सहमति हेतु राष्ट्रीय सेमिनार	24 सितम्बर, 2015 चण्डीगढ़	**डॉ वनिता सूरी** स्नातकोत्तर आयुर्विज्ञान शिक्षण एवं अनुसंधान संस्थान चण्डीगढ़
चिकित्साविज्ञान में उन्नत अनुसंधान पर सम्मेलन - ARISE-2015	28-29 सितम्बर, 2015 कट्टनकुलातुर (कांचीपुरम)	**डॉ मंगयरकारसी** SRM मेडिकल कॉलेज एवं अनुसंधान केन्द्र कट्टनकुलातुर (कांचीपुरम)
भारतीय एरोबायोलॉजिकल सोसाइटी का 18वां राष्ट्रीय सम्मेलन	28-30 सितम्बर, 2015 तुमाकुरु	**डॉ मनोहर शिन्दे** तुमकुर विश्वविद्यालय तुमाकुरु (कर्नाटक)
शोध विधिविज्ञान पर कार्यशाला	29-30 सितम्बर, 2015 तिरुचिरापल्ली	**डॉ एन. प्रभू** चेन्नई मेडिकल कॉलेज हॉस्पिटल ऐण्ड रिसर्च सेंटर तिरुचिरापल्ली
तुलनात्मक अंतःस्रावीविज्ञान और प्रजनन जैविकी पर राष्ट्रीय संगोष्ठी (CERB 2015)	1-3 अक्टूबर, 2015 शान्तिनिकेतन	**डॉ सुदीप्ता मैत्रा** सेंटर फॉर एडवांस स्टडीज़, विश्व भारती शान्तिनिकेतन
IAPSCON 2015	1-4 अक्टूबर, 2015 मुम्बई	**डॉ रवि रामद्वार** इंडियन एसोसिएशन ऑफ पीडियाट्रिक सर्जंस (IAPS) मुम्बई
25वां RSA CPCON 2015	2-4 अक्टूबर, 2015 अमृतसर	**डॉ अनिता कुमारी** श्री गुरु राम दास आयुर्विज्ञान एवं अनुसंधान संस्थान अमृतसर
CRITICON 2015	2-4 अक्टूबर, 2015 वाराणसी	**डॉ आर. के. वर्मा** बनारस हिन्दू यूनिवर्सिटी वाराणसी

फार्मास्युटिकल्स में IPR, नवाचार एवं पहुंच के बीच संतुलन पर सम्मेलन	7 अक्टूबर, 2015 अहमदाबाद	**श्री संदीप कोचर** ASSOCHAM नई दिल्ली
भारतीय विषाणुविज्ञानी संस्था का 24वां राष्ट्रीय सम्मेलन	8-10 अक्टूबर, 2015 शिलांग	**प्रो. ए. सी. फूकन** नॉर्थ ईस्टर्न इंदिरा गांधी रीजनल इंस्टीट्यूट ऑफ हेल्थ ऐण्ड मेडिकल साइंसेज (NEIGRIHMS) शिलांग (मेघालय)
भारत में कुष्ठरोग की स्थिति को बनाए रखने के लिए मार्गों की खोज में कुष्ठरोग की वर्तमान स्थिति पर सम्मेलन	9 अक्टूबर, 2015 आगरा	**डॉ श्रीकान्त त्रिपाठी** राष्ट्रीय जालमा कुष्ठ एवं अन्य माइकोबैक्टीरियल रोग संस्थान आगरा
फार्मेकोइकोनॉमिक्स एवं परिणाम अनुसंधान का 4वां अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन	9-10 अक्टूबर, 2015 नई दिल्ली	**प्रो एस. के. गुप्ता** दिल्ली फार्मास्युटिकल्स साइंसेज़ एवं अनुसंधान विश्वविद्यालय (DPSRU) नई दिल्ली
भारतीय प्रतिरक्षाविज्ञान संस्था का 42वां वार्षिक सम्मेलन : IMMUNOCON	9-11 अक्टूबर, 2015 पटना	**डॉ शुभंकर कुमार सिंह** राजेन्द्र स्मारक आयुर्विज्ञान अनुसंधान संस्थान पटना
पीड़ा प्रबंधन पर एक लाइव कार्यशाला एवं सी एम ई तथा भारतीय पीड़ा चिकित्सक संस्था का उद्घाटन	10-11 अक्टूबर 2015 वाराणसी	**प्रो. वीरेन्द्र रस्तोगी** इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज़ बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी
मीडिया में कैंसर अनुसंधान पर कार्यशाला	12-14 अक्टूबर, 2015 नोएडा	**डॉ शशि शर्मा** कौशिकी एवं निवारक अर्बुदविज्ञान संस्थान नोएडा
IAPSM का द्वितीय पूर्वोत्तर क्षेत्रीय सम्मेलन 2015	15 अक्टूबर, 2015 शिलांग	**डॉ स्टार पाला** नॉर्थ ईस्टर्न इंदिरा गांधी रीजनल इंस्टीट्यूट ऑफ हेल्थ ऐण्ड मेडिकल साइंसेज (NEIGRIHMS) शिलांग (मेघालय)
SWASRAYA BHARATH- पर सेमिनार - 2015	15-21 अक्टूबर, 2015 कोज़ीकोड	**श्री पी. बी. शनोज** स्वदेशी विज्ञान अभियान शास्त्री भवन कोची
औषध वितरण अनुसंधान में नैनोटेक्नोलॉजीः चुनौतियां, अवसर और नवाचार पर राष्ट्रीय सम्मेलन	16-17 अक्टूबर, 2015 मुम्बई	**डॉ अनिल एम. पेढे** शोभाबेन प्रतापभाई पटेल स्कूल ऑफ फार्मेसी ऐण्ड टेक्नोलॉजी मैनेजमेंट SUKM'S NMIMS डीम्ड विश्वविद्यालय मुम्बई
सीसा, पर्यावरण और स्वास्थ्य पर प्रथम अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन	26-27 अक्टूबर, 2015 जोधपुर	**डॉ प्रवीण शर्मा** अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान जोधपुर

सम्मेलन : ASSOHCON 2015 एवं ऑटोनॉमिक एवं वाहिकीय कार्य परीक्षण पर कार्यशाला	26-29 अक्टूबर, 2015 बरेली	डॉ बिन्दू गर्ग श्री राममूर्ति स्मारक आयुर्विज्ञान संस्थान (SRMS IMS) बरेली
RT-PCR माइक्रोऐरे नेक्स्ट जेनरेशन सीक्वेंसिंग और आंकड़ा विश्लेषण में फन जीनोमेमिक्स - हैण्ड्स ऑन प्रशिक्षण पर कार्यशाला	26-30 अक्टूबर, 2015 हैदराबाद	डॉ स्मिता सी. पवार उस्मानिया विश्वविद्यालय हैदराबाद
माइटोकाण्ड्रिया और न्यूरोडिजेनेरेशन पर IBRO/APRC स्कूल की अंतर्राष्ट्रीय कार्यशाला	26-30 अक्टूबर, 2015 चण्डीगढ़	डॉ रजत संधीर पंजाब विश्वविद्यालय चण्डीगढ़
शोध विधिविज्ञान पर कार्यशाला	27-31 अक्टूबर, 2015 मदुरई	श्री सुनील जोसेफ अरविन्द इंस्टीट्यूट ऑफ कम्यूनिटी ऑफ्थैल्मोलॉजी मदुरई
जैवआयुर्विज्ञान अनुसंधान में अग्रणी पर 10वीं संगोष्ठी	29-31 अक्टूबर, 2015 दिल्ली	प्रो. वाणी ब्रह्मचारी डॉ बी. आर. अम्बेडकर सेंटर फॉर बायोमेडिकल रिसर्च दिल्ली विश्वविद्यालय दिल्ली
भारतीय एड्स संस्था पर 8वां राष्ट्रीय सम्मेलन (ASICON-2015)	30 अक्टूबर-1 नवम्बर, 2015 मुम्बई	डॉ आई. एस. गिलाडा एड्स सोसाइटी ऑफ इंडिया मुम्बई
IFDC-2015 पर पूर्व- सम्मेलन, खाद्य संघटन एवं सार्वजनिक स्वास्थ्य पोषण पर कार्यशाला एवं 11वां अंतर्राष्ट्रीय खाद्य आंकड़ा सम्मेलन	1-5 नवम्बर, 2015 हैदराबाद	डॉ आर. अनंतन राष्ट्रीय पोषण संस्थान हैदराबाद
अर्बुदविज्ञान नर्सिंग, नए आयामों का पता लगाने और विस्तार करने पर 17वां राष्ट्रीय अर्बुदविज्ञान नर्सिंग सम्मेलन	5-7 नवम्बर, 2015 नई दिल्ली	श्रीमती एलियम्मा जोसेफ Dr BRAIRCH अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान नई दिल्ली
25वीं स्वदेशी साइंस कांग्रेस	5-8 नवम्बर, 2015 कलाडी (केरल)	डॉ के. मधुसूदनन स्वदेशी साइंस मूवमेंट कोची (केरल)
नैनोस्ट्रक्चर्ड पॉलीमेरिक मैटीरियल्स ऐण्ड पॉलीमर नैनोकम्पोज़िट्स पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन (ICNPM-2015)	13-15 नवम्बर, 2015 कोट्टायम	डॉ नन्दाकुमार कलारीक्कल IIUCNN, महात्मा गांधी विश्वविद्यालय कोट्टायम (केरल)
मनश्चिकित्सा अपडेट 2015 - मनश्चिकित्सा में रेटिंग स्केल्स पर चिकित्सीय दक्षता कार्यशाला	14-15 नवम्बर, 2015 मनीपाल	डॉ रवीन्द्र मुलोनी कस्तूरबा मेडिकल कॉलेज मनीपाल (कर्नाटक)
स्वास्थ्य अनुसंधान में शोध विधिविज्ञान तथा नेतृत्व एवं प्रबंधन कार्यक्रम (CAMP) पर तृतीय कार्यशाला	16-28 नवम्बर, 2015 फरीदाबाद	सुश्री वैशाली देशमुख दि INCLEN ट्रस्ट इंटरनेशनल नई दिल्ली
आयुष औषधियों के फार्मेकोविजिलैंस पर सेमिनार	19 नवम्बर, 2015 चेन्नई	डॉ एम.जी. राजानन्द श्री राम चन्द्र यूनिवर्सिटी चेन्नई

कोशिका एवं कोशिकीय गतिकी के आण्विक विश्लेषण पर प्रौद्योगिकियों पर कार्यशाला (TMCCD - 2015)	19-21 नवम्बर, 2015 राउरकेला	डॉ सुनीता के. भूरिया राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान राउरकेला (ओडिशा)
भारतीय शल्यचिकित्सक संस्था (उत्तर प्रदेश चैप्टर) का 41वां वार्षिक सम्मेलन - UPASICON 2015	19-22 नवम्बर, 2015 लखनऊ	प्रो. अमित अग्रवाल संजय गांधी स्नातकोत्तर आयुर्विज्ञान अनुसंधान संस्थान लखनऊ
Ind SPNCON 2015	19-22 नवम्बर, 2015 कोची	डॉ सुहास उदयकुमारन अमृता स्कूल ऑफ मेडिकल साइंसेज़ कोचीन (केरल)
भारतीय शरीररचनाविज्ञानी संस्था का 63वां राष्ट्रीय सम्मेलन	20-23 नवम्बर, 2015 लखनऊ	प्रो.ए.के. श्रीवास्तव किंग जॉर्ज मेडिकल यूनिवर्सिटी लखनऊ
सी एम ई एवं कार्यशाला - TSICON 2015 भारतीय विषविज्ञान संस्था का 5वां वार्षिक सम्मेलन	21-24 नवम्बर, 2015 कोचीन	डॉ जोसेफ के. जोसेफ लिटिल फ्लॉवर हॉस्पिटल अंगामली (केरल)
अंतर्राष्ट्रीय सीबकथम संस्था का 7वां सम्मेलन	24-26 नवम्बर, 2015 नई दिल्ली	प्रो. वीरेन्द्र सिंह C S K हिमाचल प्रदेश कृषि विश्वविद्यालय पालमपुर (हि.प्र.)
जिरोंटोलॉजी ऐण्ड जीरियाट्रिक मेडिसिन पर तृतीय अंतर्राष्ट्रीय कांग्रेस 2015 (IGCCM 2015)	27-29 नवम्बर, 2015 नई दिल्ली	डॉ आशीष गोयल यूनिवर्सिटी कॉलेज ऑफ मेडिकल साइंसेज (UCMS) दिल्ली
द्वितीय चिकित्सीय तंत्रिकाशरीरक्रियाविज्ञान सबसेक्शन सम्मेलन	27-29 नवम्बर, 2015 नई दिल्ली	प्रो. मंजरी त्रिपाठी अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान नई दिल्ली
राष्ट्रीय नैनोटेक्नोलॉजी फोरम (NNF) के यू पी राज्य चैप्टर का वार्षिक सम्मेलन 2015	28-29 नवम्बर, 2015 मेरठ	डॉ अमित उपाध्याय LLRM मेडिकल कॉलेज मेरठ
स्वास्थ्य सुरक्षा पेशेवरों के लिए स्पाइनल मैनुअल थिरैपी स्पाइन रेडियोलॉजी और लो बैक पेन पर साक्ष्य आधारित प्रैक्टिस गाइडलाइंस में नवीन दिशाओं पर सम्मेलन	4-5 दिसम्बर, 2015 कोइम्बटूर	डॉ आर. नागरानी आर. वी. एस. कॉलेज ऑफ फिज़ियोथिरैपी कोइम्बटूर
हर्बल औषधि के प्रोत्साहन एवं विकास हेतु एकीकृत प्रयासों पर राष्ट्रीय सम्मेलन	5-6 दिसम्बर, 2015 कोलकातö	डॉ पुलोक के. मुखर्जी स्कूल ऑफ नेचुरल प्रॉडक्ट स्टडीज़ जादवपुर विश्वविद्यालय कोलकाता
नैनोमैटीरियल्स और नैनोटेक्नोलॉजी पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन (NANO-2015)	7-10 दिसम्बर, 2015 तिरुचेनगोड (नमक्कस)	डॉ वी. राजेन्द्रन सेंटर फॉर नैनो साइंस ऐण्ड टेक्नोलॉजी, के एस आर ग्रुप ऑफ इंस्टीच्युशंस तिरुचेनगोड (नमक्कल) (तमिल नाडु)

उन्नत जानपदिक रोगविज्ञान और जैवसांख्यिकी पर प्रथम कार्यशाला	7-19 दिसम्बर, 2015 चण्डीगढ़	**डॉ पी. वी. एम. लक्ष्मी** स्कूल ऑफ पब्लिक हेल्थ स्नातकोत्तर आयुर्विज्ञान शिक्षण एवं अनुसंधान संस्थान चण्डीगढ़
शोध विधिविज्ञान पर कार्यशाला - 2015	9-11 दिसम्बर, 2015 बैंगलोर	**डॉ जी. गुरुराज** राष्ट्रीय मानसिक स्वास्थ्य एवं तंत्रिकाविज्ञान संस्थान बैंगलोर
यीस्ट जैविकी पर 9वां अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन - 2015	9-12 दिसम्बर, 2015 कोलकाता	**प्रो. रतन गछुई** जादवपुर विश्वविद्यालय कोलकाता
भारत में एथिक्स रिव्यू समिति फोरम का तृतीय राष्ट्रीय सम्मेलन	11-12 दिसम्बर, 2015 लखनऊ	**डॉ एस. श्रीवास्तव** संजय गांधी स्नातकोत्तर आयुर्विज्ञान संस्थान लखनऊ
आनुवंशिक विकारों की चिकित्सा में नवीन गहन जानकारी पर सम्मेलन IAMGCON 2015	11-13 दिसम्बर, 2015 जोधपुर	**डॉ कुलदीप सिंह** अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान जोधपुर
भारतीय तंत्रिकारसायन संस्था की 29वीं वार्षिक बैठक तथा कंप्यूटेशनल तंत्रिकाजैविकी में प्रगति पर राष्ट्रीय कार्यशाला एवं सम्मेलन	16-21 दिसम्बर, 2015 शिलांग	**डॉ सुदीप पॉल** नॉर्थ ईस्टर्न हिल यूनिवर्सिटी शिलांग (मेघालय)
21वीं शताब्दी के लिए सांख्यिकी पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन (ICSTC-2015)	17-19 दिसम्बर, 2015 त्रिवेन्द्रम	**डॉ ई. आई. अब्दुल सवार** केरल विश्वविद्यालय त्रिवेन्द्रम (केरल)

आई सी एम आर के प्रकाशन प्राप्त करने के लिए महानिदेशक, भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद के नाम से डिमाण्ड ड्राफ्ट अथवा चेक भेजें। बैंक कमीशन तथा डाक व्यय अलग होगा। मनीऑर्डर/पोस्टल ऑर्डर स्वीकार नहीं किए जाएंगे। इस संबंध में और अधिक जानकारी के लिए प्रमुख, प्रकाशन एवं सूचना प्रभाग, भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद, पोस्ट बॉक्स 4911, अंसारी नगर, नई दिल्ली - 110029 से सम्पर्क करें।

दूरभाष : 91-11-26588895, 91-11-26588980, 91-11-26589794, 91-11-26589336, 91-11-26588707, (एक्स्टेंशन-228)

फैक्स : 91-11-26588662, ई-मेल : headquarters@icmr.org.in, icmrhqds@sansad.nic.in

सम्पर्क व्यक्ति : डॉ रजनी कान्त, वैज्ञानिक 'ई'

ई- मेल : kantr 2001@yahoo.co.in

सहयोग : श्रीमती वीना जुनेजा, श्रीमती सरिता नेगी

आई सी एम आर पत्रिका भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद की वेबसाइट www.icmr.nic.in पर भी उपलब्ध है

भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद्

सेमिनार/संगोष्ठियां/कार्यशालाएं आयोजित करने के लिए परिषद द्वारा आंशिक वित्तीय सहायता प्रदान की जाती है, वित्तीय सहायता के लिए निर्धारित प्रपत्र पर पूर्णतया भरे हुए केवल उन्हीं आवेदन पत्रों पर विचार किया जाएगा जो सेमिनार/संगोष्ठी/कार्यशाला आदि के आरम्भ होने की तारीख से कम से कम चार महीने पूर्व भेजे जाएंगे।

भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद के लिए मैसर्स रॉयल ऑफसेट प्रिन्टर्स,
ए–89/1, नारायणा औद्योगिक क्षेत्र, फेज़–1, नई दिल्ली–110 028 से मुद्रित। पं. सं. 47196/87